Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 SHISRRJ | Volume 4 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

संस्कृत नाट्य साहित्य में गंगा का स्वरूप

इन्दल
पूर्व शोधच्छात्र,
बी0 आर0 डी0 बी0 डी0 पी0 जी0 कालेज,
आश्रम बरहज देवरिया, उत्त प्रदेश,भारत।

Article Info
Volume 4, Issue 1
Page Number : 120-125
Publication Issue :
January-February-2021
Article History
Accepted : 10 Jan 2021
Published : 19 Jan 2021

शोध सारांश– संस्कृत नाट्य साहित्य में अनेक कवियो ने अपनी कृतियों में गंगा के महत्वपूर्ण स्वरूप का वर्णन किया है जो आज नाट्य साहित्य विश्व विख्यात हुए है।

मुख्य शब्द–संस्कृत, नाटक, साहित्य,गंगा,

अभिज्ञानशाकुन्तलम्–

त्रिस्त्रोतसं वहति यो गगनप्रतिष्ठां–
ज्योतीषि वर्तयति च प्रविभक्तरश्मिः।
तस्य द्वितीयहरिविक्रमनिस्तमस्कं
वायोरिमं परिवहस्य वदन्ति मार्गम् ।। 1

अभिज्ञानशाकुन्तलम् के सप्तम अंक में गंगा का वर्णन प्राप्त होता है। जब राजा दुष्यन्त मातलि के साथ रथ पर आरूढ़ होकर असुरों के साथ युद्ध करने के लिए स्वर्ग पर चढ़ते हुए आकाशगंगा का दर्शन करके मातलि पूछता है – यह कौन सा मार्ग है जिससे हम वहाँ जायेंगे। इसके पश्चात् मातलि गंगा मार्ग का वर्णन करते हुए कहता है–

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

दूसरे वामनावतार धारण करने वाले विष्णु के पाद विक्षेप रूपी पराक्रम से अन्धकार रहित (पापरहित–पावन) इसको उस परिवह नामक वायु का मार्ग कहते है, जो (मार्ग) आकाश में विद्यमान तीन धाराओं वाली अर्थात् गंगा को स्वर्ग में प्रवाहित होने वाली मन्दाकिनी, पृथ्वी पर प्रवाहित होने वाली भागीरथी और पाताल में प्रवाहित होने वाली भोगवती धारण करता है, और जो मार्ग यथायोग्य चारों ओर विस्तृत कर रही है सूर्यादि नक्षत्रों की किरणेां को जिसमें ऐसा नक्षत्रों को चलाता है। प्रस्तुत श्लोक में गंगा को त्रिस्त्रोंत कहकर समग्र ब्राम्हाण्ड में व्याप्त गंगा का महत्व बताया है।

उत्तररामचरितम्– उत्तररामचरितम् नामक नाटक के प्रथम अंक में (एषा प्रसन्नपुण्य सलिला भगवती भागीरथी) स्वच्छ तथा परिशुद्ध जल वाली भगवती भागीरथी का वर्णन प्राप्त होता है।

सीता सोचती हैं कि (जाने पुनरपि प्रसन्नगम्भीरासु वनराजिषु विह्रत्य पवित्र निर्मलशिशिर सलिलां भगवतीं भागीरथीमवगाहिष्य इति।) एक बार पुनः प्रसन्न एवं गम्भीर वनश्रेणियों से विचरण करके पवित्र, निर्मल तथा शीतल जल से युक्तगंगा में अवगाहन करूँ।

तृतीय अंक में भी गंगा का वर्णन देखने को मिलता है– (तमसा–श्रूयताम्। पुरा किल वाल्मीकितपोवनोपकण्ठात् परित्यज्य निवृत्ते लक्ष्मणे सीतादेवी प्राप्तप्रसववेदनम् अतिदुःखसंवेगादात्मानं गंगाप्रवाहे निक्षिपतवती। तदैव तत्र दाकरद्वयं प्रसूता। भगवतीभ्यां पृथ्वीभागीरथीभ्यामभ्युपन्ना रसातलं च नीता। स्तन्यत्यागात् परेण च दारकद्वयं तस्याः प्राचेतसस्य महर्षेर्गगांदेवी स्वयमर्पितवती।)

पूर्वकाल में (सीता को) छोडकर वाल्मीकि के आश्रम के समीप से लक्ष्मण के लौट जाने पर सीता देवी प्रसव पीडा से अभिभूत अपने को अत्यन्त दुःख के संवेग के कारण गंगा की धारा में फेंक दिया । तभी वहां उन्होने दो शिशुओं को जन्म दिया भगवती पृथ्वी और गंगा से अनुगृहीत सीता पाताल को पहुँचा दी गई। दूध छोड़ने के बाद उनके दोनों बच्चों को गंगा देवी ने स्वयं महर्षि वाल्मीकि को सौंप दिया।

गंगा– महिमा का वर्णन करती हुई तमसा सीता जी को कहती है कि (अयि वत्से ! सर्वदेवताभ्यः प्रकृष्टतम् मैश्वर्यं मन्दाकिनीदेव्यास्तत् किमित्याशङ्कसे?) अरी बेटी, गंगा जी का ऐश्वर्य सभी देवताओं से बढ़ा चढ़ा है, तो क्यों शङ्का करती हो?

चतुर्थ अंक में भी गंगा का वर्णन प्राप्त होता है – **भगवति वसुन्धरे! सत्यमति दृढासि।**

त्वं वह्निर्मुनयो वसिष्ठगृहिणी गंगा च यस्या विदु

र्माहात्म्यं यदि वा रघोः कुलगुरुदेवः स्वयं भास्कर।

विद्यां वागिव यामसूत भवती तहत्तु या दैवतं

तस्यास्त्वद्दुहितुस्तथा विशसनं किं दारुणेऽमृष्यथाः।। 2

भगवती पृथ्वी! तू निस्संदेह अत्यन्त कठोर है। जिसके प्रभाव को तू जानती है, (वसिष्ठ, वाल्मीकि आदि) मुनि लेाग, अग्नि वसिष्ठ की पत्नी (अरुन्धती और गंगा

जानती है, तथा रघुकूल के आदि पुरुष सूर्यदेव स्वयं जानते हैं। विद्या को सरस्वती के समान, स्वयं जानते है विद्या को सरस्वती के समान, जिसे आपने जन्म दिया और जो स्वयं उन देवताओं के समान ही देवता है, उसी तुम्हारी पुत्री सीता को इस प्रकार अपघात! हे कठोर, भला इसे तुमने कैसे सह लिया है।

पाप्मभ्यश्च पुनति वर्धयति च श्रेयांसि सेयं कथा

मङ्गल्या च मनोहरा च जगतो मातेव मातेव च।

तामेतां परिभावयन्त्वभिनयैर्विन्यस्तरूपां बुधाः

शब्दब्रम्हाविदः कवेः परिणतां प्राज्ञस्य वाणीमिमाम्।। 3

अरुन्धति जगद्वन्द्ये गंगापृथ्व्यौ जुषस्व नौ।

अर्पितेयं तवावाभ्यां सीता पुण्यव्रता वधूः ।। 4

अरुन्धती – वत्स ! एषा भगवती भागीरथगृहदेवता सुप्रसन्ना गंगा।5

मन्थादिव क्षुभ्यति गङ्गामम्भो व्याप्तं च देवर्षिभिरन्तरिक्षम्

आष्चर्यमार्या सह देवताभ्यां गंगामहीभ्यां सलिलादुदेति।। 6

भागीरथी – कथं त्वं सनाथाऽप्यनाथा। 7

भागीरथी – शान्तम्। अविलीना संवत्सरसहस्राणि भूयाः। 8

भागीरथी – इयं तु जननी ते विष्वम्भरा। 9

भागीरथी – विश्वम्भराऽपि नाम व्यथत इति जितमपत्यस्नेहेन। यद्वा सर्व साधारणो ह्येष मनसो मोहग्रन्थिरत्नष्वरष्चेत् नावतामनुपप्लवः संसारतन्तुः। देवि भूतधात्रि! वत्स वैदहि! समाश्वसिहि समाश्वसिहि। 10

भागीरथी – को माम पाकाभिमुखस्य जनतोर्द्वाराणि देवस्य पिधातुमीष्टे। 11

भागीरथी – भगवति वसुन्धरे! शरीरमसि संसारस्य। तत्किमसंविदानेव जामात्रे कुप्यसि? 12

भागीरथी – तथाप्येष तेऽन्ञ्लिः। 13

भवभूति ने गंगा को सभी देवताओं में श्रेष्ठ बताया है।

मुद्राराक्षस – विशाखदत्त रचित मुद्राराक्षस का मङ्गलाचरण शिव व पार्वती के संवादशैली से आरम्भ होता है। पार्वती गंगा के साथ शिव के प्रछन्न संम्बन्ध के रहस्य को जानने की इच्छा से पूछती हैं आपके शिर पर सौभाग्यशालिनी कौन है? शिव उत्तर देते हैं – शशिकला। पार्वती उसका नाम क्या है? शिव– पार्वती नाराज हो कहती है – मैं चन्द्रमा (पुरूष) के लिए नहीं पूछ रही स्त्री के विषय में पुछ रही हूँ प्रस्तुत मङ्गलाचरण में गंगा की महत्ता व्यञ्जित है कि गंगा शिव के मस्तक पर विराजमान रहती हैं।

धन्या केयं स्थिता ते शिरसि शशिकला किं नु नामैतदस्याः

नामैवास्यास्तदेतत्परिचित्तमपि ते विस्मृतं कस्य हेतोः।

नारीं पृच्छामि नेन्दुं कथयतु विषया न प्रमाणं यदीन्दु

र्देव्या निह्नोतुमिच्छोरिति सुरसरतिं शाठ्यमव्याद्विभोर्वः।। 14

रत्नावली – रत्नावली के मंगलाचरण में श्री हर्ष ने गंगा का वर्णन किया है।

सम्प्राप्तं मकरध्वजेन मथनं त्वत्तो मदर्थे पुरा,

तद् युक्तं बहुमार्गगां मम पुरो निर्लज्ज वोढुं तव।

तामेवानुनय स्वभावकुटिलां हे कृष्ण कण्ठग्रहम्,

मुञ्चेत्याह रूपा यमद्रितनया लक्ष्मीः पायात् स वः।। 15

(शड्कर के पक्ष में) पहले कामदेव ने मेरे कारण से आपसे मृत्यु को प्राप्त किया था। हे निर्लज्ज! तब मेरे समक्ष अनेक भागों में गमन करने वाली गंगा को अपने शिरपर धारण करना क्या उचित है? अर्थात नहीं। हे नीलकंठ! मेरे प्रति अनुनय को छोड॰ दो। स्वभाव में ही कुटिल उस त्रिपथगा गंगा को ही प्रसन्न करो। इस प्रकार पार्वती ने जिन शंड्कर भगवान् से कहा, वे शड्कर भगवान् आप लोगों की रक्षा करें।

(कृष्ण के पक्ष में) पहले मेरे कारण समुद्र ने आपसे मन्थन प्राप्त किया अर्थात् मेरे (लक्ष्मी) के कारण ही सागर का मन्थन हुआ। हे निर्लज्ज ! मेरे सामने ही अनेक कुमार्ग पर चलने वाली कुलटा कुब्जा के साथ विवाह करना कहाँ तक उचित है?

अर्थात् नहीं। हे कृष्ण! मेरे कण्ठालिंगन को छोड़ों। स्वभाव से कुटिल या भाव

कुटिल उस कुब्जा को ही प्रसन्न करो। इस प्रकार लक्ष्मी ने जिन भगवान् कृष्ण से कहा, वे भगवान् कृष्ण आप लोगों की रक्षा करें।

निष्कर्षतः :– संस्कृत नाट्य साहित्य में अनेक कवियो ने अपनी कृतियों में गंगा के महत्वपूर्ण स्वरूप का वर्णन किया है जो आज नाट्य साहित्य विश्व विख्यात हुए है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. अभिज्ञानशाकुन्तलम् 7/6
2. उत्तररामचरितम् 4/5
3. उत्तररामचरितम् 7/20
4. वही, 7/17
5. वही, गद्य 7/432
6. वही, 7/16
7. वही, 7/420
8. वही, 7/419
9. वही, 7/411
10. उत्तररामचरितम्, 7/412

11. वही, 7/413 (7/4)

12. वही, 7/415

13. वही, 7/415

14. वही, 7/417 (गद्य)

15. वही, 1/1

16. रत्नावली 1/3